elefin

हितों के टकराव की नीति का सारांश



हितों के टकराव की नीति का यह सारांश Elefin द्वारा अपने व्यवसाय के संचालन के दौरान उत्पन्न होने वाले हितों के टकराव की पहचान करने, उनका प्रबंधन करने और उनका प्रकटीकरण करने के लिए अपनाई गई व्यवस्थाओं को निर्धारित करता है।

1. नीति का उद्देश्य

1.1. Elefin ("कंपनी") ने अपने व्यवसाय के संचालन के दौरान उत्पन्न होने वाले टकरावों की पहचान करने, उनका प्रबंधन करने और उनका प्रकटीकरण करने के लिए हितों के टकराव की एक नीति स्थापित की है, जिसे वह लागू करती है और बनाए रखती है।

1.2. हितों के टकराव की नीति का यह सारांश ("नीति") उन व्यवस्थाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिन्हें कंपनी अपने ग्राहकों के प्रति अपने कर्तव्यों के संबंध में हितों के टकराव का प्रबंधन करने के लिए बनाए रखती है। अनुरोध किए जाने पर हितों के टकराव की नीति का पूर्ण संस्करण उपलब्ध कराया जा सकता है।

2. टकराव कब उत्पन्न हो सकते हैं

2.1. हितों का टकराव तब उत्पन्न हो सकता है जब कंपनी, कोई सहयोगी संस्था या कोई संबंधित व्यक्ति:

- किसी ग्राहक की कीमत पर वित्तीय लाभ प्राप्त कर सकता है या वित्तीय हानि से बच सकता है;
- किसी सेवा या लेनदेन के परिणाम में ऐसा हित रखता है जो उस परिणाम में ग्राहक के हित से भिन्न है;
- किसी एक ग्राहक या ग्राहकों के समूह को दूसरे की तुलना में तरजीह देने के लिए प्रोत्साहन रखता है;
- वही व्यवसाय करता है जो ग्राहक करता है; या
- किसी ग्राहक को प्रदान की गई सेवा के संबंध में कोई कमीशन, लाभ या अन्य प्रलोभन प्राप्त करता है या उसका भुगतान करता है।

2.2. टकराव को जन्म देने वाली प्रमुख परिस्थितियों में वे स्थितियाँ शामिल हैं जहाँ:

- कंपनी ऐसी ग्राहक पोज़िशन निष्पादित करती है या उनकी व्यवस्था करती है जिनमें कंपनी, किसी सहयोगी संस्था या किसी संबंधित व्यक्ति का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष महत्वपूर्ण हित है;
- कंपनी ग्राहकों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं के संबंध में सहयोगी संस्थाओं का उपयोग करती है; या
- कंपनी ग्राहक पोज़िशन के संबंध में तृतीय पक्षों को लाभ, कमीशन या अन्य पारिश्रमिक का भुगतान करती है या उनसे स्वीकार करती है।

3. टकरावों के प्रबंधन के उपाय

3.1. कंपनी हितों के टकराव को रोकने या उनका प्रबंधन करने के लिए प्रक्रियाएँ और नियंत्रण बनाए रखती है। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं, किंतु ये इन्हीं तक सीमित नहीं हैं:

- टकराव के जोखिम वाली गतिविधियों में लगे व्यक्तियों के बीच सूचना के आदान-प्रदान को रोकने या नियंत्रित करने की प्रक्रियाएँ;
- गोपनीय सूचना तक पहुँच को प्रतिबंधित करने के लिए सूचना अवरोध, जिनमें "चाइनीज़ वॉल" शामिल हैं;
- कर्तव्यों का पृथक्करण, जहाँ एक साथ या क्रमिक भागीदारी टकराव के उचित प्रबंधन को प्रभावित कर सकती है;
- संबंधित व्यक्तियों के लिए वास्तविक या संभावित हितों के टकराव का प्रकटीकरण करने की अपेक्षाएँ;
- कर्मचारियों को टकरावों की पहचान करने, उन्हें रोकने और उनका प्रबंधन करने में सहायता देने हेतु प्रशिक्षण;
- मानवीय त्रुटि या अनुचित हस्तक्षेप के जोखिम को कम करने के लिए डिज़ाइन किए गए स्वचालित नियंत्रण;
- गुणवत्ता नियंत्रण, निगरानी और सुरक्षा समीक्षाएँ;
- रिश्वत-विरोधी, भ्रष्टाचार-विरोधी और व्हिसलब्लोइंग (मुखबिरी) प्रक्रियाएँ;
- ऐसी गतिविधियों पर प्रतिबंध या निषेध जो अप्रबंधनीय टकराव को जन्म दे सकती हैं; और
- जहाँ किसी टकराव को पूरी तरह से रोका नहीं जा सकता या उसका पर्याप्त प्रबंधन नहीं किया जा सकता, वहाँ ग्राहक को प्रकटीकरण।

4. ग्राहक की स्वीकृति

4.1. ग्राहक अनुबंध में प्रवेश करके, ग्राहक यह स्वीकार करता है कि हितों के टकराव उत्पन्न हो सकते हैं या विद्यमान हो सकते हैं, और ऐसे टकरावों के प्रबंधन हेतु कंपनी की व्यवस्थाओं के अधीन, ऐसे टकरावों के बावजूद कंपनी के कार्य करने के लिए सहमति देता है।